ॐ जय जगदीश हरे आरती

ॐ जय जगदीश हरे आरती
ॐ जय जगदीश हरे,
स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों केसंकट,
दास जनों केसंकट,
क्षण में दूर करे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

जो ध्यावे फल पावे,
दुःख बिनसे मन काुःख बिनसे मन का,
स्वामी दुःख बिनसे मन का ।ुःख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे घर आवे,
सुख सम्पति घर आवे घर आवे,
कष्ट मिटे तन का ॥टे तन का ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

मात पिता तुम मेरे
म मेरे,
शरण गहूं किसकीसकी,
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी ।सकी ।
तुम बिन और न दूजाम बिन और न दूजा,
तुम बिन और न दूजाम बिन और न दूजा,
आस करूंमैं जिसकी ॥

सकी ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम पूरण परमात्माम पूरण परमात्मा,
तुम अन्तर्यामीामी,
स्वामी तुम अन्तर्यामी ।
ामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर,
पारब्रह्म परमेश्वर,

तुम सब केस्वामी ॥ केस्वामी ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम करुणा केसागरम करुणा केसागर,
तुम पालनकर्ता,
स्वामी तुम पालनकर्ता ।
ा ।
मैं मूरख फलकामी,
मैं सेवक तुम स्वामीम स्वामी,
कृपा करो भर्ता॥

ा॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम हो एक अगोचरम हो एक अगोचर,
सबकेप्राणपति,
स्वामी सबकेप्राकेप्राणपति । ।
किस विधि मिलूं दयामयलूं दयामय,
किस विधि मिलूं दयामयलूं दयामय,
तुमको मैं कुमति ॥ ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

दीन-बन्धु दुःखुःख-हर्ता,
ठाकुर तुम मेरे
म मेरे,
स्वामी रक्षक तुम मेरे ।म मेरे ।
अपने हाथ उठाओ,
अपने शरण लगाओ,
द्वार पड़ा तेरे ॥ा तेरे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

विषयषय-विकार मिटाओटाओ,
पाप हरो देवा,
स्वमी पाप(कष्ट) हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ
ाओ,

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ
ाओ,
सन्तन की सेवा ॥

ॐ जय जगदीश हरे,

स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों केसंकट,
दास जनों केसंकट,
क्षण में दूर करे ॥